प्राचीन भारत में सैन्य व्यवस्था : एक सर्वेक्षण

डॉ० शशिशेखर झा*

इतिहासकार एक वैज्ञानिक की भांति उपलब्ध सामग्री की समीक्षा करके अतीत का सही चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता हैं, उसके लिए साहित्यिक साधन, पुरातात्विक साधन और विदेशियों के वर्णन सभी का महत्व है। प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए शुद्ध ऐतिहासिक साहित्यिक सामग्री अन्य देशों की अपेक्षा बहुत कम उपलब्ध है।

सभ्यता के विकास के साथ ही मनुष्य का सुरक्षात्मक विकास प्रारम्भ हुआ। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक कारकों की तरह सैन्य कारक भी सभ्यता के उत्थान और पतन में महत्वपूर्ण व निर्णायक भूमिका निभाता हैं सैन्य इतिहास ऐतिहासिक अध्ययन की लोकप्रिय शाखा है जिसमें युद्धकाल के साथ–साथ शान्ति काल में भी सेना के सभी रूपों यथा थल सेना, नौ सेना व वायु सेना की समस्त गतिविधियों को सम्मिलित किया जाता है।

मनुष्य के स्वयं, परिवार एवं कालान्तर में राष्ट्र की रक्षा के लिए सैन्य संगठन की आवश्यकता महसूस हुई। इसी के साथ मानव इतिहास में सेना की प्रथम नींव रखी गई और हथियारों का निर्माण प्रारम्भ हुआ। विचारणीय प्रश्न यह है कि मनुष्य ने स्वयं की सुरक्षा एवं हथियारों अथवा सुरक्षात्मक उपकरणों का निर्माण कब से आरम्भ किया? प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन से यह जानकारी प्राप्त होती है कि मनुष्य प्राक् ऐतिहासिक काल से ही हथियारों का निर्माण कर रहा था। यह हथियार स्वयं की रक्षा एवं शिकार करने के लिए उपयोग में लाये जाते थे। दल अथवा झुण्ड में रहने के बाद परिवार एवं कुटुम्ब की रक्षा हेतु भी हथियारों का निर्माण बड़े पैमाने पर हुआ। हालांकि सेना का गठन अभी तक प्रारम्भ नहीं हुआ था। सम्भवत् प्राक् ऐतिहासिक काल में दल की सुरक्षा का दायित्व, दल में रहनेवाले सभी मनुष्यों का था। धीरे–धीरे राष्ट्रों का निर्माण होने लगा और सुरक्षा के लिए बड़े पैमाने पर सैनिकों की आवश्यकता हुई। सम्भवतः इसी कारण से सैन्य संगठन अस्तित्व में आया। प्राचीन काल में विश्व में सेना एवं

***पीएच०डी० इतिहास विभाग बी०एन०एम०यू०, मधेपुरा।**

युद्ध विकास यहीं से प्रारम्भ हुआ था। भारत में भी सैन्य परम्परा का यही स्वरूप उभर कर सामने आता है।

विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में से एक हड़प्पा सभ्यता के नगरों मोहनजोदड़ो तथा अन्य स्थानों से नगर की चारदिवारी एवम् चौकीदारों के घरों के साक्ष्य प्राप्त हुए है। इससे सिद्ध होता है कि विकास के प्रारम्भिक चरण में भी मनुष्य सुरक्षा के प्रति पूर्णतया सजग था। हड़प्पा सभ्यता की लिपि के न पढ़े जाने के कारण इस समय की सैन्य व्यवस्था के बारे में अभी तक पूर्णतया जानकारी प्राप्त नहीं हो पाई है। हड़प्पा संस्कृति के विनाश के कारणों में एक संभावित कारण आर्यो का आक्रमण भी माना जाता है। आर्यो के आगमन के साथ ही वैदिक काल की शुरूआत भी मानी जाती है। वैदिक काल के इतिहास की जानकारी के लिए केवल साहित्यिक सामग्री ही उपलब्ध है। इन साहित्यिक स्त्रोंतों का प्रमुख विषय धर्म एवम् दर्शन ही हैं। परन्तु प्रसंगवश इनमें सैन्य सूचनाएँ भी प्राप्त होती है। ऋग्वेद वैदिक साहित्य में प्रथम स्त्रोत है जिससे भारतीय आर्यों के विषय में विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त होती है। ऋग्वेद के सातवें मण्डल से तत्कालिक प्रसिद्ध दसराज्ञ युद्ध के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

यह युद्ध पुरूएणी नदी के किनारे लड़ा गया था। ऋग्वेद के श्लोकों से इस युद्ध के कारणों, घटनाओं, तात्कालीन राजनीति, कूटनीतिक सम्बन्धों, युद्ध कौशल तथा रणनीति, व्यूह रचना इत्यादि की विस्तृत सूचना प्राप्त होती है। वैदिक कालीन ग्रंथ यजुर्वेद के उपवेद धनुर्वेद में धनुष–बाण एवम् अन्य अस्त्र–शस्त्रों के विषय में तथा उनके उपयोग से संबंधित विस्तृत जानकारी प्रदान की गई है। विष्णु पुराण में धनुर्वेद को ज्ञान की 18 शाखाओं में से एक बताया गया है। विचारणीय यह है कि भारतीय आर्यों ने भारत में जो युद्ध लड़े, वो आक्रामक नहीं थे, अपितु तात्कालिक परिस्थितियों के लिए आवश्यक थे। ऋग्वैदिक काल में युद्ध प्रायः आर्यों एवम् अनार्यों के मध्य तथा दो आर्य कबीलों के मध्य हुआ करते थे। इन्द्र को युद्ध का देवता माना गया। इसे युद्ध में शत्रु का नाशक एवम् वज्र धारण करने वाला बताया गया है। इसके अतिरिक्त ऋग्वेद के श्लोकों से तात्कालिक कूटनीति सन्धियाँ, रणनीति सैन्य दल, यूर्ग इत्यादि की पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है। एक अन्य महत्वपूर्ण सूचना यह ज्ञात होती है कि युद्ध में पराजित अनार्यों को दास बनाया जाता था। सम्भवतः भारतीय इतिहास में दास प्रथा का यह प्रथम उदाहरण है।

उत्तर वैदिक काल तक आते–आते जब कबिलों का अस्तित्व समाप्त हो गया था, तब उनके स्थान पर विशाल राज्यों का निर्माण हुआ। इस समय

'सार्वभौम' एवम् अधिराज्य के स्वरूप में राज्यों का विस्तार होने लगा था। उत्तर वैदिक काल में कुरू, पांचाल, कोशल, काशी, विदेह आदि प्रमुख राज्य थे। स्वाभाविक है कि विशाल राज्यों के लिए विशाल एवम् सुदृढ़ सेना की भी आवश्यकता हुई। ब्राह्मण में राजा की उत्पत्ति का कारण सैनिक आवश्यकता को बताया गया है। इस समय की विशेषता रही कि राजा अपनी शक्ति एवम् सैन्य दृढ़ता का प्रदर्शन करने के लिए वाजपेय, 'राजसूय' व 'अश्वमेघ' यज्ञों के अनुष्ठान का आयोजन करते थे। यजुर्वेद संहिता तथा ब्राह्मण ग्रंथी में राजा के उच्चाधिकारियों में सेनानी (सेनापति) की सूचना प्राप्त होती है, जो युद्ध में सेना का संचालन करता था। हालांकि युद्ध में मुख्य नेतृत्वकर्त्ता प्रायः राजा ही होता था।

वेदोत्तर काल में महाकाव्यों रामायण व महाभारत और सूत्रों एवम् धर्मशास्त्रों से तात्कालीन सैन्य व्यवस्था तथा युद्धों की पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है। महाकाव्यों का समय निर्धारण विभिन्न विद्वानों ने भिन्न बताया है। परन्तु स्मरणीय तथ्य यह है कि महाकाव्यों में प्रदत्त राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवम् सैन्य तथ्य वेदों से भिन्नता लिए हुए है। साथ ही महाकाव्यों में कालक्रम में भी भिन्नता है। किन्तु महाकाव्यों में तात्कालिक सैन्य व्यवस्था एवम् संगठन की अत्यधिक जानकारी प्राप्त होती है। रामायण में श्रीराम और रावण के बीच युद्ध दिखाया है, वहीं महाभारत में कौरवों एवम् पाण्डवों के मध्य महाभारत का युद्ध दर्शाया गया है। दोनों ही महाकाव्यों से तात्कालिक कूटनीति, राजनीति, संधियों, सैन्य व्यवस्था, संगठन, रणनीति, व्यूह रचना, हथियार इत्यादि के विषय में महत्वपूर्ण सूचना मिलती है। महाकाव्यों तथा पुराणों के समालोचनात्मक विश्लेषण से ज्ञात होता है कि इस समय में प्रचलित सैन्य व्यवस्था के आधार पर ही मध्यकाल तक भारत में हिन्दू सैन्य व्यवस्था स्थापित रही। केवल समय और परिस्थितियों के अनुरूप ही उसमें परिवर्तन तथा विकास सम्भव हुए। परन्तु युद्ध की नीति तथा नियम पुरातन ही रहे। पुराणों में अस्त्र–शस्त्रों, युद्ध पद्धति इत्यादि की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। हाँलाकि पुराणों की ऐतिहासिकता पर प्रश्न चिन्ह लगा होता है।

बौद्ध और जैन साहित्यिक स्त्रोतों ने छठी शताब्दी ई0 पू0 में सोलह शक्तिशाली राज्यों के अस्तित्व को दर्शाया है, जिन्हें षोडग महाजनपद कहते थे। महाजनपदों में आपसी युद्ध तथा सैन्य गतिविधियों के संचालन के भी साक्ष्य प्राप्त होते है। इससे ज्ञात होता है कि राज्य का आकार एवम् शक्ति में वृद्धि होने के साथ–साथ सैन्य व्यवस्था में भी वृद्धि एवम विकास हुआ। महाजनपदों में मगध अपनी शक्तिशाली सेना तथा कूटनीति से सबसे शक्तिशाली राज्य के रूप में अभ्युदित हुआ। राज्य के नंद वंश के समय में सिकन्दर का भारत पर आक्रमण हुआ। युनानी

इतिहसकार एरियन ने इस आक्रमण का वर्णन करते हुए ही युनानी एवम् भारतीय सैन्य व्यवस्था और सेना के विषय में महत्वपूर्ण सूचनायें प्रदान की है।

नन्दों के पश्चात मगध में मौर्य वंश की स्थापना हुई जिसके अनतर्गत पूरे भारत में एकछत्र स्थापित हुआ। मौर्य वंश के इतिहास एवम् सैनिक संगठन की सूचना कौटिल्य की अर्थशास्त्र, मैगस्थानीज की इण्डिका इत्यादि से प्राप्त होती है। इण्डिका अपने मूल रूप मे उपलब्ध नहीं है बल्कि स्ट्रैबो, डियोडोरस, प्लिनी, एरियन प्लूटार्क जस्टिन इत्यादि लेखको के ग्रंथों में इण्डिका के उद्धरण प्राप्त होते है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र का मूल विषय राजनीति है परन्तु कोटिल्य ने राज्य के प्रव्येक विभाग जिसमे सैन्य विभाग भी था, का अलग वर्णन किया है।

मौर्य वंश के बाद शुंग कण्व, सातवाहन चेदि आदि वंशो ने भारत के विभिन्न भागों पर राज्य किया। इसके अतिरिक्त विदेशी आक्रमण भी हुए जिसमें हिन्द– यवन, शक, कुषाण इत्यादि थे। इन आक्रमणों के साथ ही भारतीय सैन्य संगठन में भी परिवर्तन हुए। इन आक्रमणों के सफल होने की पीछे एक महत्वपूर्ण तथ्य यह था कि उस समय भारत मे छोटे–छोटे स्वतंत्र राज्य नहीं थे। इसलिए इन आक्रमणों का सामना करने के लिए कोई सुचारू सैन्य व्यवस्था नहीं थी। हांलाकि यवन अथवा शक आक्रमणकारियों की सैन्य प्रणाली संख्या एवम् रणनीति के विषय में कोई जानकारी पाप्त नहीं होती है, परन्तु भारतीय राजाओं की पराजय का अर्थ यही था कि मौर्य वंश के पश्चात् भारतीय सैन्य संगठन सुदृढ़ नहीं रहा था।

यह दृढ़ता गुप्त वंश की स्थापना के पश्चात् पुनः स्थापित हुई। यवनों के आक्रमणों तथा गुप्त वंश की स्थापना के मध्य मौर्य सैन्य प्रणाली से निरन्तर परिवर्तन तथा विकास जारी थे। चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त एवं चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने गुप्त साम्राज्य को भारत की सुदृढ़ केन्द्रीय शक्ति के रूप में स्थापित किया। हालांकि गुप्त साम्राज्य की सैनिक शक्ति लगभग मौर्य वंश की सैन्य प्रणाली पर ही आधारित थी। परन्तु सैन्य संगठन के सन्दर्भ में सर्वप्रथम सामन्तवाद के लक्षण दृष्टव्य हुए, जो सैन्य संगठन में भी मौजूद थे।

यद्यपि भारत में सामंतवाद के अस्तित्व पर विवाद हैं आर0 एस0 शर्मा के अनुसार भारत में सामंतवाद अस्तित्व में था तथा इसकी दो विशेषतया दृष्टव्य होती है यथा, जमीनदारों का वर्ग और कृषक समाज। कृषि समाज में दोनों की प्रधान भूमिका थी। राज्यों का कर एकत्रीकरण सामंतो के कारण ही संभव हो पाया और इस कारण समाज में अनेक शक्ति केन्द्रों यथा, पुजारी, मठ, मंदिर, अग्रहार इत्यादि का उद्भव हुआ।

प्राचीन काल से आधुनिक काल की भारतीय सैन्य परम्परा का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि सैन्य प्रणाली का संगठन सभी कालों में मूलभूत रूप से लगभग समान ही रहा है। सेना के विभिन्न अंगों में भी कोई विशेष परिवर्तन नहीं दिखाई देते हैं। केवल समय व परिस्थितियों के अनुसार उनकी उपयोगिता में कमी अथवा वृद्धि होती रही है यथा–ऋग्वैदिक काल की हस्ति सेना गुप्तकाल तक उतनी महत्वपूर्ण नहीं रहती, जबकि आरम्भिक सल्तनतकाल में पुनः होती है। इसी प्रकार गुप्तकालीन सामन्ती व्यवस्था अपने परिवर्तित रूप में पुनः संगठित होती है। इसी प्रकार गुप्तकालीन सामन्ती व्यवस्था अपने परिवर्तित रूप में ब्रिटिश काल में भी इम्पीरियल सर्विस ट्रप्स के यप में दृष्टिगोचर होती है। गुप्तकाल में सामन्तवाद, सल्तनतकाल में इकतेदारी, मुगलकाल में मनसबदारी व ब्रिटिश काल में देशी सैन्य टुकड़ियाँ आरम्भिक सामन्तवाद के ही विभिन्न रूप है। इसके अतिरिक्त अस्त्र शस्त्रों में भी निरन्तर विकास एवं परिवर्तन होता है।

डॉ0 अम्बेडकर ने 'शूद्र कौन' पुस्तक में ऋग्वेद में वर्णित दसराज्ञ युद्ध के आधार पर साबित किया है कि आर्य मूल रूप से भारत के ही निवासी थे। वह कहीं बाहर से नहीं आये थे। आज उन्हीं के नाम पर राजनीति करने वाले तथाकथित दलित वादी आर्यों को जब बाहरी कहते हैं तो वह एक तरह से डॉ0 अम्बेडकर को खारिज कर विदेशी शक्तियों के हाथ में खेलने के संकेत देते हैं।

दूसरी बात, सुदास ने जब भारत वर्ष के ही दस राजाओं को हराया तो उसे क्षत्रिए जाति से निकाल दिया गया। ब्राह्मणों ने उसके वंश से उपनयन का अधिकार छीन लिया और उसे शुद्र श्रेणी में डाल दिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. बी0 के0 मजूमदार–द मिलिट्री सिस्टम इन एनसीएण्ट इंडिया–कलकत्ता–द वर्ल्ड प्रेस लिमिटेड–1955
2. रामाशंकर त्रिपाठी–प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास, 1971
3. ऋग्वेद–7.82.2
4. विष्णु पुराण, सम्पादक श्रीराम शर्मा, बरेली संस्कृति संस्थान–1967
5. के0 सी0 श्रीवास्तव–प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति–इलाहाबाद युनाइटेड बुक डिपो, 2003

6. आर0 के0 सक्सेना, मुगल शासन प्रणाली, जयपुर पंचशील प्रकाशन, 1989
7. हु वाज शुद्रास–डॉ0 भीमराव अम्बेडकर